नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

अयोध्या : सभ्यता के पुनर्जागरण का शंखनाद

अयोध्या में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और संघ प्रमुख डॉ. मोहन भागवत की उपस्थिति में राम मंदिर के शिखर पर धर्म ध्वजा का फहराया जाना एक साधारण धार्मिक अनुष्ठान भर नहीं है. यह घटना भारतीय सभ्यता के धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आत्मविश्वास का ऐसा क्षण है, जिसे आने वाली पीढ़ियां एक नए युग की शुरुआत के रूप में याद करेंगी. सदियों पुराने संघर्ष, प्रतीक्षा और तपस्या के बाद अयोध्या में लहराई यह भगवा पताका न केवल आस्था की जीत है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना के पुनरुत्थान का सशक्त संदेश भी है. सबसे पहले इसके धार्मिक अर्थ को समझना जरूरी है. रामलला का जन्म स्थान करोड़ों हिंदुओं की आस्था का केंद्र रहा है. रामचरितमानस से लेकर वाल्मीकि रामायण तक, राम भारतीय मानस में मर्यादा और धर्म के सर्वोच्च आदर्श के रूप में स्थापित हैं. ऐसे में धर्म ध्वजा का फहराया जाना सनातन धर्म के सिद्धांतों और मूल्यों का प्रत्यक्ष उद्घोष है. यह उस अटूट आस्था का उत्सव है, जिसने संघर्षों, बाधाओं और प्रतीक्षाओं के बावजूद अपना दीपक नहीं बुझने दिया. यह ध्वजा बताती है कि धर्म संस्थापना केवल शास्त्रों का विषय नहीं, बल्कि समाज के साझा संकल्प से साकार होने वाली जीवंत प्रक्रिया है.

धर्म ध्वजा का यह क्षण सामाजिक दृष्टि से भी उतना ही महत्वपूर्ण है. राम मंदिर आंदोलन कोई एक वर्ग, एक क्षेत्र या एक संगठन का अभियान नहीं था. इस निर्माण में गरीब, किसान, मजदूर, कारोबारी, महिलाएं और आदिवासी—भारत के हर तबके ने श्रद्धा और श्रमदान से भागीदारी की. यही कारण है कि यह घटना केवल धार्मिक विजय नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता का राष्ट्रीय उत्सव बनी. अयोध्या आज यह बताती है कि जब समाज एक ध्येय के लिए खड़ा हो जाए, तब विभाजन की रेखाएं स्वतः मिट जाती हैं. अयोध्या का सांस्कृतिक मूल्य भी असाधारण है. राम मंदिर की नागर शैली में बनी भव्य वास्तुकला भारतीय कला, कारीगरी और आध्यात्मिक विरासत का सर्वोच्च उदाहरण बनकर दुनिया के सामने खड़ी है. धर्म ध्वजा इस विरासत की पूर्णता का प्रतीक है. अब अयोध्या केवल एक धार्मिक शहर नहीं, बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पर्यटन का केंद्र बनने जा रही है. इससे भारत की सॉफ्ट पावर को जबरदस्त मजबूती मिलेगी. वैदिक मंत्रोच्चार और प्राचीन अनुष्ठानों की पुनर्स्थापना यह संदेश देती है कि भारत अपनी परंपराओं को आधुनिकता के साथ आत्मविश्वास से आगे बढ़ा रहा है.

ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो यह क्षण एक जटिल विवाद के शांतिपूर्ण समाधान का प्रतीक है. यह एक ऐसे अध्याय का पटाक्षेप है जिसने दशकों तक राजनीतिक, कानूनी और सामाजिक विमर्श को प्रभावित किया. प्रधानमंत्री और संघ प्रमुख की संयुक्त उपस्थिति इस संदेश को और मजबूत करती है कि देश अब इतिहास की उलझनों को पीछे छोड़कर एकात्मता और भविष्य निर्माण की ओर बढ़ रहा है. इस ध्वजा के साथ भारतीयता की वह चेतना भी पुनर्जीवित हुई है, जो कभी आक्रांताओं और वैमनस्य के बीच धूमिल पड़ गई थी. कुल मिलाकर अयोध्या में फहराई गई धर्म ध्वजा केवल एक प्रतीक नहीं, बल्कि सभ्यता के आत्मविश्वास, एकता और पुनर्जागरण का शंखनाद है. यह भारत को उसके स्वर्णिम अतीत से जोड़ते हुए उज्जवल भविष्य की ओर ले जाने वाला मार्गदर्शक बनकर सामने आई है. यही कारण है कि यह क्षण न सिर्फ भारत, बल्कि विश्व के लिए भी सांस्कृतिक उत्थान का सार्थक संदेश लेकर आया है.

संविधान दिवस पर विशेष

सपनों को हकीकत में बदलता है हमारा संविधान

सुरेन्द्र शर्मा

> भारत मात्र भूगोल या सीमाओं से परिभाषित देश नहीं, बल्कि आदर्शों, मानवीय गरिमा, साझा सांस्कृतिक विरासत और लोकतांत्रिक मूल्यों पर निर्मित एक जीवंत राष्ट्र है. यह संविधान ही है जिसने विविधताओं के बीच एडुकता का सूत्र प्रदान किया और अनेकता में एकता को हमारी पहचान बनाया. आज भारत विश्व पटल पर नए गौरव और आत्मविश्वास के साथ खड़ा है. यह हमारे गौरवशाली संविधान की सफलता का परिणाम है. डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा रखी गई नींव आने वाली सदियों तक भारत के उत्थान और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती रहेगी. हमारा कर्तव्य है कि हम संविधान की गरिमा, मर्यादा और उसकी एकात्म भावनाओं को अपने आचरण में धारण करें. जब भारत का प्रत्येक नागरिक संविधान के प्रति निष्ठावान होगा, तभी संविधान दिवस का संदेश सार्थक होगा और तभी डॉ. भीमराव अंबेडकर को सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकेगी. आज गर्व से कहा जा सकता है कि संविधान का भारत ही हमारी पहचान, हमारी शक्ति और हमारा भविष्य है.

भारत का संविधान विश्व का सबसे बड़ा, सर्वाधिक विस्तृत और दूरदर्शी संविधान माना जाता है. यह केवल प्रावधानों का संकलन भर नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों की स्वतंत्रता, समानता, न्याय, सम्मान और लोकतांत्रिक आकांक्षाओं का पवित्र दस्तावेज़ है. यह संविधान विविधताओं से भरे भारत को एक सूत्र में पिरोते हुए राष्ट्र को स्थिरता, सामर्थ्य और प्रगति की दिशा देता है. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही थी कि भिन्न-भिन्न जातियों, धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों और सैकड़ों रियासतों से बने इस देश को एक सशक्त शासन प्रणाली के अंतर्गत कैसे संगठित किया जाए.

केवल सत्ता परिवर्तन से लोकतंत्र स्थापित नहीं हो सकता था, बल्कि उसके लिए एक मजबूत आधारशिला की आवश्यकता थी, जो देश के हर नागरिक को समान अधिकार तथा सुरक्षा प्रदान करे. इसी उद्देश्य से हमारा संविधान निर्मित हुआ जो भारत को सही मायनों में लोकतांत्रिक गणराज्य का स्वरूप देता है. 26 नवम्बर 1949 को संविधान को अंगीकृत किया गया, जो भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में अविस्मरणीय तिथि है. यह केवल संवैधानिक शुरुआत नहीं, बल्कि भारत के पुनर्निर्माण की ऐतिहासिक घोषणा थी. संविधान निर्माण की प्रक्रिया अत्यंत व्यापक, सूक्ष्म, गहन और जटिल थी. संविधान सभा ने तीन वर्षों तक सतत विमर्श और विचार-मंथन किया. दो वर्ष, ग्यारह माह और सत्रह दिन तक चले 165 से अधिक अधिवेशनों में हर वर्ग की आकांक्षाओं को स्थान दिया गया. भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता को समझते हुए ऐसी संरचना गढ़ना चुनौतीपूर्ण था, जो सभी भारतीयों को समान सम्मान महसूस करवा सके. संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में डॉ. भीमराव अंबेडकर का योगदान सर्वोपरि रहा. उनकी विधिक प्रतिभा, तार्किक सोच, आधुनिक विचारधारा और राष्ट्र के प्रति अटूट प्रतिबद्धता ने विश्व के सबसे सशक्त लोकतांत्रिक ढाँचे को जन्म दिया. स्वयं टी.टी. कृष्णमाचारी ने संसद में स्वीकार किया था कि यदि कोई व्यक्ति संविधान का श्रेय पाने का पात्र है तो वे डॉ. भीमराव अंबेडकर ही हैं.

डॉ. भीमराव अंबेडकर का लक्ष्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं था. वे सदियों से सामाजिक अन्याय, छुआछूत और शोषण का शिकार वंचित वर्गों को समान अधिकार दिलाने के लिए संघर्षरत रहे. संविधान में छुआछूत उन्मूलन, समानता, स्वतंत्रता, आरक्षण व्यवस्था और अल्पसंख्यक संरक्षण जैसे प्रावधान उनके सामाजिक न्याय के सिद्धांत के प्रतीक हैं. यह प्रावधान आज भी भारत के समावेशी लोकतंत्र की रीढ़ माने जाते हैं. डॉ. भीमराव अंबेडकर ने हाशिये पर रह रहे लोगों को सम्मानजनक जीवन देने का संकल्प लिया और संविधान द्वारा उन्हें राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी का अवसर दिया. पूना पैक्ट के माध्यम से उन्होंने सामाजिक समरसता और लोकतांत्रिक संतुलन को सर्वोपरि रखा. यह निर्णय उनके त्याग, दूरदर्शिता और राष्ट्रहित के प्रति उनकी निष्ठा का प्रमाण है.

संविधान निर्माण के दौरान राष्ट्रीय प्रतीकों और लोकतांत्रिक संस्थाओं की संरचना पर भी व्यापक विचारङ्कविमर्श हुआ. ध्वज में अशोक चक्र जोड़ने का सुझाव भी डॉ. भीमराव अंबेडकर का था, जो सत्य, धर्म, न्याय और निरंतर प्रगति का प्रतीक है. यह भारत की अटूट गतिशीलता का संदेश देता है कि यह राष्ट्र कभी स्थिर रहकर नहीं बल्कि निरंतर आगे बढ़ते हुए नए आयाम गढ़ता रहेगा. डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों में मानवता सर्वोपरि थी. वे महात्मा फुले, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद और डॉ. हेडगेवार जैसे महान विचारकों से प्रेरित थे, जिन्होंने सामाजिक परिवर्तन की मशाल थामे रखी. अंततः बौद्ध धर्म को अपनाकर उन्होंने समानता एवं करुणा के आदर्शों को मानव इतिहास में अमर कर दिया. डॉ. भीमराव अंबेडकर ने चेताया था कि लोकतंत्र का सबसे बड़ा शत्रु बाहरी आक्रमण नहीं, बल्कि आंतरिक असमानता और भ्रष्टाचार है.

लेखक भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश के प्रदेश उपाध्यक्ष व स्वतंत्र लेखक हैं.

दिल्ली डायरी

बिहार में सुशासन की चाबी अब भाजपा के हाथ

प्रवेश कुमार मिश्र

बिहार विजय के बाद भले ही भाजपाई रणनीतिकारों ने औपचारिक तौर पर नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री के रूप में स्वीकार कर एकजुटता का संदेश दिया है लेकिन मंत्रियों के विभाग बंटवारे में जिस तरह से गृह विभाग जैसा महत्वपूर्ण विभाग भाजपा ने सम्राट चौधरी को दिलाया है उससे साफ है कि सुशासन की चाबी अब नीतीश बाबू के हाथ निकलकर भाजपा के पास चली गई है.

चर्चा है कि नीतीश कुमार को जिस सख्त प्रशासनिक निर्णय और नियंत्रण के कारण सुशासन बाबू कहा जाता रहा है वह ताकत यानी गृहमंत्रालय ही अब उनके पास नहीं रह गया है इसलिए अब पटना से लेकर दिल्ली तक यह चर्चा की जा रही है कि बिहार की कानून व्यवस्था को दुरूस्त करने की जिम्मेदारी से भाजपाई रणनीतिकारों ने नीतीश कुमार को मुक्त कर एक तीर से कई निशाने साध दिए हैं . हालांकि कैबिनेट की पहली बैठक में पांच साल में एक करोड़ नौकरी देने का निर्णय कर नीतीश कुमार ने सुशासन को कानून व्यवस्था से आगे बढ़ाकर विकास परक करने का प्रयास कर दुरगामी सोच को परिलक्षित करने का प्रयास किया है.

एसआईआर पर बंगाल से लेकर दिल्ली तक हंगामा

चुनाव आयोग द्वारा बंगाल के साथ-साथ देश के कई राज्यों में एसआईआर कराने का समयबद्ध कार्यक्रम का विरोध जिस तरह से राजनीतिक दलों के साथ-साथ बीएलओ स्तर के कर्मचारी कर रहे हैं उसके कारण दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में बहुस्तरीय चर्चा आरंभ हो गई है. हालांकि यह मामला सर्वोच्च न्यायालय में भी विचाराधीन है फिर विपक्षी राजनीतिक दलों का स्पष्ट आरोप चुनाव आयोग पर लगाया जा रहा है. आयोग की निष्पक्षता को लेकर वैसे भी कांग्रेस समेत कई पार्टियों ने अपने तर्कों व कथित साक्ष्यों के आधार पर आरोप लगाने का प्रयास किया है लेकिन अभी भी आयोग का रूख सख्त बना हुआ है. एसआईकार को जमीनी स्तर पर कार्यान्वित करने वाले कई बीएलओ द्वारा कथित दबाव में आत्महत्या को लेकर भी राजनीतिक दल आयोग पर हमलावर हैं. हालांकि एक तरफ सर्वोच्च न्यायालय में मामला चल रहा है तो दूसरी ओर राजनीतिक दल इस अभियान को अपने स्तर से पारदर्शी बनाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से अपने संगठनों के जमीनी स्तर के पदाधिकारियों को भी सक्रिय कर रहे हैं. यानी हंगामा और तैयारी दोनों चल रहा है.

बिहार हार के बाद बिखराव के कगार पर इंडिया गठबंधन

बिहार विधानसभा चुनाव में करारी शिकस्त के बाद कांग्रेसी रणनीतिकारों का इंडिया गठबंधन से मोहभंग होने लगा है. इसी वजह से कांग्रेस का एक बड़ा वर्ग गठबंधन की राजनीति के बजाय अपने दम पर आगे बढ़ने के पक्ष में दलील दे रहा है. चर्चा है कि गांधी परिवार में भी इस विषय को लेकर एक राय नहीं बन पा रही है. कहा जा रहा है कि पार्टी के कुछ वरिष्ठ रणनीतिकारों ने पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी व राहुल गांधी को पत्र लिखकर गठबंधन को राष्ट्रीय स्तर पर करने के बजाय राजनीतिक जरूरत के हिसाब से राज्यस्तरीय करने की सलाह दी है. उनका कहना है कि किसी भी दल को नैसर्गिक गठबंधन सहयोगी मानकर हमेशा नुकसान झेलने व उनके हठी व्यवहार को बढावा देने के बजाय एक झटके में एकला चलो की घोषणा करना चाहिए. इतना ही नहीं चुनावी हार के लिए जिम्मेदार पार्टी पदाधिकारियों पर भी सख्त कार्रवाई करने की भी आवाज उठ रही है.

कर्नाटक कांग्रेस का अंतर्कलह दिल्ली पहुंचा

आरंभिक दिनों से ही दो खेमों में बंटी कर्नाटक कांग्रेस के डीके शिवकुमार गुट के नेताओं ने एकबार फिर मुख्यमंत्री बदलने की मांग के साथ दिल्ली में डेरा डाल रखा है. डीके गुट के दर्जनों विधायक पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से मुलाकात कर कर्नाटक बचाने के लिए सत्ता हस्तांतरण के फार्मूले को लागू कर शिवकुमार को मुख्यमंत्री बनाने की मांग की है. हालांकि अभी भी वरिष्ठ रणनीतिकारों द्वारा सुलह की जा रही है. जबकि दूसरी ओर भाजपाई रणनीतिकार कांग्रेस अंदर मचे इस हलचल पर नजर डालें हुए हैं.

नए श्रम कानूनों से क्या हासिल होगा !

संसद द्वारा 29 केंद्रीय कानूनों को रद्द कर उनके स्थान पर 4 श्रम कानून बनाए गए जिसके 5 वर्ष बाद अब केंद्र सरकार ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने की घोषणा करते हुए इसे ऐतिहासिक कदम निरूपित किया है. इनमें वेतन, औद्योगिक संबंध, सामाजिक सुरक्षा के अलावा पेशेवर सुरक्षा, स्वास्थ्य व कार्य स्थितियों से संबंधित कानूनों का समावेश है. खास बात यह है कि इसमें गिग वर्कर्स और असंगठित श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा का विस्तार किया गया है. इसमें अंतरराज्यीय प्रवासी श्रमिकों को भी लाभ दिया गया. पुराने कानूनों के समय आईटी व आईटीईएस वर्कर नहीं थे. नए कानून में गिग वर्क व प्लेटफार्म वर्क को परिभाषित किया गया है. इसमें एग्रीगेटर्स को अपनी वार्षिक कारोबारी आय का 1 या 2 प्रतिशत श्रमिकों को देना होगा. राजस्थान, कर्नाटक, झारखंड, तेलंगाना व बिहार जैसे राज्यों के गिग वर्कर्स (झोमैटो, स्विगी) आदि के ग्राहकों को डिलीवरी देने वालों के लिए अपने कानून बनाए हैं जो केंद्रीय कानून पर आधारित हैं. केंद्र ने समय पर न्यूनतम वेतन देने, नए कर्मियों को नियुक्ति पत्र देने, महिलाओं को पुरुषों के समान वेतन देने, एक वर्ष काम के बाद फिक्स टर्म कर्मी को ग्रेच्युटी, 40 वर्ष से अधिक आयु के कर्मचारी का वार्षिक स्वास्थ्य परीक्षण, ओवरटाइम में डबल भुगतान करने जैसे श्रम सुधार लागू किए हैं. इससे 40 करोड़ श्रमिक सामाजिक सुरक्षा के दायरे में आ जाएंगे. यद्यपि उद्योगों ने इन श्रम कानूनों का स्वागत किया है लेकिन ट्रेड यूनियन इनका विरोध कर रही हैं. यद्यपि यह कानून 2019 व 2020 में बन गए थे लेकिन राजनीतिक व कुछ राज्यों के विरोध की वजह से लागू नहीं हो पाए थे. अब भी इन कानूनों को लागू करने की चुनौती रहेगी. देश में श्रमशक्ति के सृजन के लिए इनकी उपयोगिता बताई जाती है. इसमें श्रमिकों के संरक्षण के साथ उद्योगों की प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखा गया है. धर्मादाय अस्पताल, निजी महाविद्यालय, क्लब को भारी मुनाफा होने पर भी इस कानून के दायरे से बाहर रखा गया है.

देश में श्रमशक्ति के सृजन के लिए इनकी उपयोगिता बताई जाती है. इसमें श्रमिकों के संरक्षण के साथ उद्योगों की प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखा गया है. धर्मादाय अस्पताल, निजी महाविद्यालय, क्लब को भारी मुनाफा होने पर भी इस कानून के दायरे से बाहर रखा गया है.

निशानेबाज

नेता के साथ मौजूद रहता चमचा खुशी में मोदी ने घुमाया गमछा

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, राजनीति में नेता के लिए चमचा महत्व रखता है या गमछा? हमें लगता है कि जैसे गुड़ से मक्खी चिपक जाती है वैसे ही चमचे अपने नेता से चिपके रहते हैं. वह बिचौलिए या दलाल बनकर जरूरतमंदों को हलाल करते हैं. नेता तक पहुंचने के लिए चमचा एक माध्यम रहता है.

हमने कहा, 'चमचा पक्का बेशर्म होता है वह नेता के बंगले पर तड़के सबेरे पहुंच जाता है. नेता की डांट-फटकार को आशीर्वाद समझकर ग्रहण करता है. उसे खुशामद करने की कला आती है. वह नेता से कहता है कि हम तो आपके पुराने चमचे हैं. जैसा चाहे घोट लीजिए. चमचा मौका देखकर टी स्पून, टेबल स्पून या सर्विंग स्पून बन जाता है. बड़े नेता के चमचे कुछ ज्यादा ही खनकते हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, चमचागिरी पर नियंत्रण लगाने के लिए मुख्यमंत्री ने मंत्रियों को

अपनी पसंद के स्वीय सहायक या ओएसडी रखने की अनुमति नहीं दी. अब मुख्यमंत्री खुद तय करते हैं कि किस मंत्री को कौन सा ओएसडी या ऑफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी देना है. हमने कहा, 'चमचे की खासियत यही रहती है कि वह नेता या मंत्री की हां में हां मिलाता है और अपने बॉस का इशारा भलीभांति समझता है. उसके हाथ में रहता है कि किसे मंत्री से मिलने दे या किसे घंटों वेटिंग में बिठाए रखे.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, चमचे की बहुत चर्चा हो गई, अब गमछे की बात की जाए. प्रधानमंत्री मोदी ने बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की शानदार जीत के बाद अपने गले में पड़ा गमछा हवा में घुमाया. उनका यह अनोखा अंदाज लोगों को पसंद आया. वह चाहते तो उंगलियों से अंग्रेजी का 'वी' अक्षर बनाकर विक्ट्री की खुशी मना सकते थे लेकिन उन्होंने गमछा घुमाकर खुद को बिहार, यूपी व एमपी के उन ग्रामीण लोगों से जोड़ दिया जो कंधे पर गमछा रखकर बाहर निकलते हैं. इसे आप मोदी का परफॉर्मिंग आर्ट कह सकते हैं.'

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12092 - डॉ. सागर खादीवाला

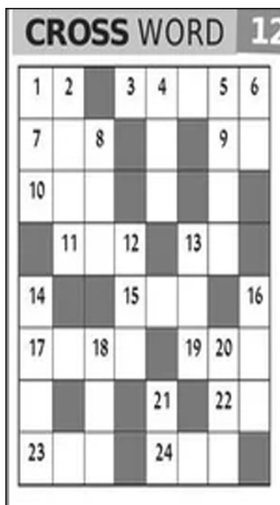

बाएं से दाएं
1. यज्ञ, हवन 3. पंजाब स्थित स्वर्णस मंदिर का ऐतिहासिक शहर 7. जाड़े के दिनों में ओढ़ने का एक प्रकार का रूई भरा वत्र 9. पराजय, हार, माता, मां 10. दीपक के धुएं की कालिख जिसे आंखों में आंजते हैं 11. नकल करके बनाया हुआ, बनावटी 13. ग्रहण करने या पकड़ने की क्रिया या भाव, पकड़ 15. एक रोग जिसमें कोई अंग सुन्न या बेकार हो जाता है, फालिज 17. झपटकर या शीघ्रता से आगे बढ़ना, कोई वस्तु पाने के लिए हाथ आगे बढ़ाना 19. हिंदुओं के चार वर्षों में से दूसरा 22. झूला, डोली (सं.) 23. जगन्नियंता, परमेश्वर (सं.) 24. मनुष्य, आदमी

ऊपर से नीचे
1. होली का त्योहार, एक राक्षसी का नाम 2. रुपये के लेन-देन का व्यवहार करने वाला, श्रेष्ठ पुरुष 4. मृत प्राणी या उसका शरीर (सं) 5. भारी आयोजन, धूमधाम से होने वाला कोई बड़ा काम या उत्सव 6. लीन, लिप्त 8. आकाश, स्वर्ग (उर्दू) 12. निगलना 13. झरोखा (सं.) 14. मिठाई बनाने या बेचने वाला 16. पाजेब, नुपूर 18. नदी या समुद्र के किनारे की भूमि 20. तीन दोष (वात, पित्त और कफ) (सं) 21. पोषाक, पहरावा (उर्दू)

Solution 12091

आ	ग	■	म	हा	दा	न	■
का	ग	■	क	स	■	क	ला
श	रा	र	त	■	का	ली	न
■	■	ज	ब	र	न	■	त
बे	मा	नी	■	ली	■	खो	■
ख	र	■	क	■	ग्रा	ह	क
ब	■	सो	म	र	स	■	शि
र	स	म	ला	ई	■	जो	श

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में अचानक धन लाभ का योग है, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, वर्ष के मध्य में राजनैतिक क्षेत्र में विवाद के कारण मन खिन्न रहेगा, साझेदारी में विवाद बढ़ेगा, धन संकट का सामना करना होगा, वर्ष के अन्त में व्यक्तिगत संबंधों में सुधार होगा, मित्रों के सहयोग से लाभ होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों से धन संकट का सामना करना पड़ेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का साझेदारी में विवाद बढ़ेगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को मित्रों का सहयोग, व्यापार मं वृद्धि होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को सहयोग प्राप्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक मित्रों की मदद मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को निजी पुरूषार्थ की प्राप्त होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मित्रों का सहयोग रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, व्यक्तित्वान होगा. बचपन में स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा. स्वाभाव से चंचल और जिद्दी होगा. अपनी मनमर्जी का मालिक होगा. खेलों के प्रति अधिक रूचि रखेगा. किसी कला के क्षेत्र में उन्नति करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

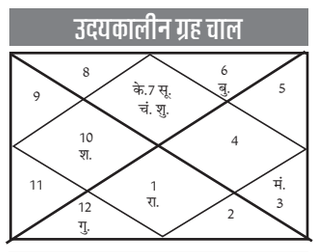

पंचांग

रा.मि. 05 संवत् 2082 मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी बुधवासरे रात 7/33, श्रवण नक्षत्रे रात 10/11, वृद्धि योगे दिन 10/41, कौलव करणे सू.उ. 6/41, सू.अ. 5/19, चन्द्रचार मकर, पर्व- स्कन्द षष्ठी व्रत, चम्पा षष्ठी, शु.रा. 10,12,1,4,5,8 अ.रा. 11,2,3,6,7,9 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी को श्रवण नक्षत्र के प्रभाव से गेहूँ, जौ, चना, बाजरा के भाव में जोरदार तेजी होगी, गुड़ खांड़, में नरमी का रूख रहेगा, बादाम कन्या, के भाव में समता रहेगी. भाग्यांक 1415 है.

मेष- नये कारोबार का मन बन सकता है, वाहनादि का सुख प्राप्त होगा, भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, खर्च की अधिकता रहेगी.

वृषभ- विवादास्पद मामलों से अभी आप दूर रहें, रोगी के कार्यों में खर्च होगा, किसी उत्सव में जाने का अवसर मिलेगा, मांगलिक कार्यों पर विचार होगा.

मिथुन- आप किसी के साथ मिलकर नई साझेदारी कर सकते हैं, कामकाज पूरा होगा, कोर्ट कचहरी के कार्यों में सफ्लता प्राप्त होगी, व्यवसाय लाभप्रद रहेगा.

कर्क- दूसरों की पूँजी का उपयोग कर आप अच्छा लाभ कमा सकते हैं, कुटुम्बियों से सुख प्राप्त होगा, निजी पुरूषार्थ की प्राप्ति होगी, सम्मान प्राप्त होगा.

सिंह- परिवार में समझौते करके चलना लाभकारी रहेगा, घरेलू यात्रा का योग है, अनावश्यक कार्यों में समय खर्च होगा, दौड़धूप करना पड़ेगी.

कन्या- करीबी रिश्तेदारों की चिन्ता होगी, शुभ कार्यों की शुरूआत संभव है, व्यापार व्यवसाय लाभप्रद रहेगा, उन्नति होगी. धन के स्त्रोत बढ़ेंगे.

तुला- मित्र या रिश्तेदार की मदद करना होगी, राजकीय कार्यों में सफ्लता मिलेगी, नौकरी में लाभ होगा, मनोरंजक स्थल की सैर होगी.

वृश्चिक- पैतृक संपत्ति संबंधी विवाद सामने आ सकते हैं, महत्वपूर्ण निर्णय अभी टाल दें, कोई समस्या दूर होगी, व्यापार व्यवसाय लाभप्रद रहेगा.

धनु- महत्वपूर्ण कार्य अटक सकते हैं, सावधानी रखकर कार्य करें, समय का सदुपयोग करें, किसी तरह की चोट मोच से शारीरिक कष्ट हो सकता है.

मकर- घर की साज सज्जा नवीनीकरण का मन बनेगा, उच्च शिक्षा का अवसर मिलेगा, पारिवारिक चिन्ता रह सकती है, कार्यों में प्रगति होगी.

कुम्भ- आप योजनाओं को समय से पहिले पूरा कर सकते हैं, जिससे अच्छा लाभ होगा, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, व्यर्थ की चिन्ता रह सकती है.

मीन- कार्यक्षेत्र में सफ्लता के लिये नई तकनीक सीख सकते हैं, लेखनादि के कार्यों मे सफ्लता मिलेगी, संतान प्राप्ति एवं सुख प्राप्ति का योग है.

SUDOKU 7224

6					7			
		8	2				7	5
	4			3				6
	7	1			2		5	
8				4				3
	2		8			9	6	
2				8			3	
4	3				9	8		
			3					9

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7223

7	4	6	9	1	5	8	3	2
1	5	2	8	3	7	4	6	9
9	3	8	2	6	4	7	1	5
8	6	4	7	9	1	5	2	3
5	2	7	3	4	6	9	8	1
3	9	1	5	8	2	6	7	4
2	7	9	1	5	8	3	4	6
6	1	5	4	7	3	2	9	8
4	8	3	6	2	9	1	5	7